SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

चित्रकार एस.एम. पंडित के चित्रों में अभिज्ञान शाकुंतलम् : प्रकृति चित्रण के संदर्भ में

मिठाई लाल, शोधार्थी, चित्रकला विभाग,
दृश्य कला संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणासी, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
मिठाई लाल, शोधार्थी, चित्रकला विभाग,
दृश्य कला संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय,
वाराणासी, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 07/12/2020
Revised on : -----
Accepted on : 14/12/2020
Plagiarism : 00% on 07/12/2020

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Monday, December 07, 2020
Statistics: 9 words Plagiarized / 2515 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

fp=dkj ,l.,e.iafMr ds fp=ksa esa vfHkKku 'kkdqarye~ : ç—fr fp=.k ds lanHkZ esa A lH;rk ds [ksr esa igys cht dyk ds iM+sA dyk,a lH;rk ds çFke l= esa vkbZaA /keZ,v/;kRe,foKku, vkfn ckn ds l=ksa esa vk,Adyk ml rjg ls mi;ksxh ugha gks ldrh ftl rjg ls rhj ;k gy mi;ksxh gSa A dyk ls uk rks tkuoj dk f'kdkj fd;k tk ldrk gS uk gh Qly mxkbZ tk ldrh gS fdarq dyk thou laokjus esa lgk;rk djrh gS A thou dh uhjlrk dks nwj Hkxkrh gS Aog ân; dks ek/kq;Z ls Hkj nsrh gS A gekjs thou dks le`) cukrh gSA ;g dyk gh gS ftlus gesa i'kqvksa ls Åij mBk;k vkSj euq"; cuk;kA euq"; dks euq"; cukus esa ftruk ;ksxnku /keZ dk gS mruk gh dyk dk Hkh gSA

शोध सार

सभ्यता के खेत में पहले बीज कला के पड़े। कलाएं सभ्यता के प्रथम सत्र में आई। धर्म, अध्यात्म, विज्ञान आदि बाद के सत्रों में आए। कला उस तरह से उपयोगी नहीं हो सकती जिस तरह से तीर या हल उपयोगी हैं। कला से ना तो जानवर का शिकार किया जा सकता है, ना ही फसल उगाई जा सकती है, किंतु कला जीवन संवारने में सहायता करती है, जीवन की नीरसता को दूर भगाती है। वह हृदय को माधुर्य से भर देती है, हमारे जीवन को समृद्ध बनाती है। यह कला ही है जिसने हमें पशुओं से ऊपर उठाया और मनुष्य बनाया। मनुष्य को मनुष्य बनाने में जितना योगदान धर्म का है उतना ही कला का भी है। कला उतनी ही प्राचीन है जितनी कि स्वयं मानव जाति। पूरी दुनिया की संस्कृति व इतिहास सबसे अधिक सुरक्षित कलाओं में ही है ।

मुख्य शब्द

सभ्यता, मनुष्य, संस्कृति, प्रकृति।

यदि हम भारतीय कला की बात करें तो हम इसके अनेको उदाहरण प्राप्त होते हैं। कला एवं साहित्य एक दूसरे के पूरक है। कभी साहित्य से कला को प्रेरणा मिली है और कभी कला से साहित्य को। कुछ उदाहरण तो ऐसे भी हैं जहां चित्रकारों ने किसी प्रसंग को हजारों वर्ष बाद भी मूर्त रूप में चित्रित कर उसे प्रसांगिक बनाया है। उन्हीं में से एक हैं प्रकृति के चारु चित्रकार महाकवि कालिदास। कालिदास की रचनाओं में मानवीय जीवन के सौंदर्य को बड़ी ही सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। जहां प्रकृति एवं मानवीय संबंध की प्रगाढ़ता हमें सबसे अधिक दिखलाई पड़ती है। यही कारण है कि लगभग 2000 वर्ष बाद भी आधुनिक चित्रकारों के लिए कालिदास उतने ही प्रासंगिक हैं जितने अपने काल में थे। आधुनिक भारतीय चित्रकला की शुरुआत बीसवीं शताब्दी से प्रारंभ

हो जाती है। यह एक ऐसा दौर था जब कलाकारों ने विषय के रूप में ऐतिहासिक एवं पौराणिक व समसामयिक घटनाओं के साथ–साथ साहित्य को भी चुना। कालिदास की रचनाएं इसलिए भी कलाकारों को पसंद है क्योंकि उनमें जीवन का समग्र रूप दिखलाई पड़ता है। जिसमें प्रकृति, पशु, पक्षी, प्रेम, मानवीयता, अलौकिकता आदि समाहित हैं। आधुनिक भारतीय चित्रकारों में सबसे पहला नाम आता है, राजा रवि वर्मा का जिन्होंने अभिज्ञान शाकुंतलम् का चित्रण कर दुष्यंत एवम् शकुंतला के प्रेम को घर–घर तक पहुंचाया। इसके बाद कई चित्रकारों ने कालिदास के काव्य व कथानक को चित्रित किया। इनमें शैलेंद्र नाथ डे, देवकीनंदन शर्मा, रामगोपाल विजयवर्गीय, एस.एम. पंडित आदि प्रमुख नाम हैं। यहां यथार्थवादी चित्रकार एस.एम. पंडित के चित्रों पर प्रकाश डाला जा रहा है, जो कालिदास की कालजयी रचना अभिज्ञान शाकुंतलम् पर आधारित हैं। एस.एम. पंडित का जन्म 25 मार्च 1916 में गुलबर्ग कर्नाटक में हुआ। इनकी शुरुआती शिक्षा सुधाकरराव अलेनकर के सानिध्य में हुई, जो जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट मुंबई से कला की शिक्षा प्राप्त किए थे। इसके बाद पंडित ने मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट से कला में डिप्लोमा प्राप्त किया। 1935 में यह मुंबई आ गए एवं नूतन कला मंदिर में कला शिक्षा ग्रहण करने लगे। इसके साथ ही सर जेजे स्कूल ऑफ आर्ट से इन्होंने डिप्लोमा प्राप्त किया जहां पर इन्हें श्री के.बी. चूड़ेकर एवं प्रसिद्ध चित्रकार एम.वी. धुरंधर के निर्देशन में कला शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला। एम.वी. धुरंधर के चित्रों के विषय पौराणिक ऐतिहासिक व साहित्य पर आधारित हैं, जिसका एस.एम. पंडित पर गहरा असर पड़ा। इसके साथ ही राजा रवि वर्मा का भी पंडित पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा जिससे यह यथार्थ चित्रण की तरफ अग्रसर होते चले गए। इनके चित्रों में सजीवता एवं यथार्थता के पीछे एक बड़ा कारण यह भी है कि आर्थिक कारणों से इन्हें अपने अध्ययन के दौरान सिनेमा के पोस्टर बनाने पड़े। वह दौर ऐसा था जब फिल्मों के पोस्टर चित्रकार भारी मात्रा में बनाया करते थे। पंडित ने कई फिल्मों के लिए स्टूडियो का भी डिजाइन किया। यह पहले भारतीय चित्रकार बने जिन्होंने हॉलीवुड के लिए भी कार्य किया और शो कार्ड का निर्माण किया। इन्होंने फिल्मों में पोस्टर के लिए अपनी स्वयं की ग्वाश शैली विकसित की जो स्वतरू सूख जाती थी, जिसका इन्हें अत्यंत लाभ मिला।

एस.एम. पंडित का जीवन अनगिनत कलाकारों के लिए आदर्श है। जब पंडित घर से निकले थे तो वह एकदम धरातल पर खड़े थे। उनकी मौसी ने अपना कंगन बेचकर उन्हें पढ़ने के लिए भेजा था। परंतु एस.एम. पंडित ने अपने कलाकर्म से सफलता का नया अध्याय लिखा और फिर कभी उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। एसएम पंडित भारतीय संस्कृति और साहित्य से काफी प्रभावित रहे। इनके चित्रों के विषय भारतीय साहित्य पौराणिक कथाएं महाभारत, रामायण पुराण आदि रहे। इसके साथ ही महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध कृति अभिज्ञान शाकुंतलम् पर इन्होंने चित्रण किया जो अत्यंत लोकप्रिय हुआ। राजा रवि वर्मा की शैली का इन पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा। इन्हें राजा रवि वर्मा द्वितीय भी कहा जा सकता है। एस.एम. पंडित ने धार्मिक चित्रों के साथ–साथ काफी संख्या में व्यक्ति चित्रों का भी निर्माण किया इसलिए इनके चित्रों में पात्रों के चेहरों के भाव अत्यंत सजीव होते हैं। कालिदास के विषय वस्तु पर कई आधुनिक चित्रकारों ने चित्र बनाए। कालिदास के काव्यों एवं नाटकों में वर्णित प्रसंग अत्यंत सजीव हैं, इसीलिए चित्रकारों के कालिदास पसंदीदा विषय रहे हैं।

कालिदास का प्रकृति प्रेम

कालिदास का प्रकृति के साथ प्रगाढ़ प्रेम है। वह प्रकृति को सजीव एवं मानवीय भावों से ओतप्रोत मानते हैं। उनकी प्रकृति दुःख सुख का अनुभव करके मनुष्य के साथ दुःखी या सुखी होती है। शकुंतला वृक्षों को अपना भाई तथा लताओं को अपनी बहन समझकर उनकी सेवा में संलग्न होती है। वह कहती हैः

अस्ति में सोदर स्नेहोयप्येतेषु (आ. शा. 1/48)
उद्गलितदर्भक वलाः मृग्यः परित्यक्तनर्तनामयूराः
अपसृतपाण्डुपत्राएमुय्चन्त्यश्रूणीव लताः (आ. शा. 4/12)

अर्थात् शकुंतला के वियोग में मृगियों ने घास खाना छोड़ दिया है, मोरों ने नाचना बंद कर दिया है, एवं लताएं पीले पत्तों रूपी आंसू गिरा रही हैं। इस तरह हम देखते हैं कि कालिदास का प्रकृति प्रेम वर्तमान में भी अत्यंत

प्रासंगिक है। कालिदास का लोकप्रिय नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् आज जन–जन में लोकप्रिय है। इसमें प्रेम एवं प्रकृति के चित्र के साथ साथ जीवन आदर्श को भी दर्शाया गया है। आज भी युवा प्रेमियों के लिए दुष्यंत एवं शकुंतला आदर्श हैं। डॉ. मैकडॉनल कालिदास की नाट्य शैली की प्रशंसा करते हुए कहते हैं:

This is the act (4) which contains the most obvious beauties for here the poet displays to the full richness of the fancy is abundant sympathy with nature and profound knowledge of the human heart.

प्रोफेसर जीसी झाला का अभिमत है कि शाकुंतलम के कथानक में प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रकृति के बिना तो शकुंतला का अस्तित्व ही असंभव होगा।

Nature in the Shakuntala is not more book ground it has enterd into the warp of wood of the drama …for without nature Shakuntala would be impossible.

इस प्रकार अभिज्ञान शाकुंतलम् एवं उसके प्रसङ्ग साहित्य की भाषा में यथार्थ चित्र हैं।

चित्रकार एस.एम. पंडित के चित्रों में अभिज्ञान शाकुंतलम् का चित्रण

चित्र सं. 1 शकुंतला का पत्र लेखन

अभिज्ञान शाकुंतलम् का यह प्रसंग इतना लोकप्रिय हुआ कि साहित्य जगत के साथ.साथ कला जगत में भी रचनाकार अपने अपने अनुसार इसका उद्धरण करते हैं। चित्रकार एसएम पंडित ने इस विषय को बहुत ही यथार्थ रूप में चित्रित किया है। इनके इस चित्र में शकुंतला मखमली घास पर लेट कर दुष्यंत को कमल पत्र पर पत्र लिख रही है। शकुंतला के चेहरे पर विचार का भाव है। बाईं तरफ एक सखी बैठी है जो पत्र लिखने में शकुंतला की सहायता कर रही है। दाहिनी तक दूसरी सखी घास पर लेटी है एवं शकुंतला के मुख मंडल की तरफ देख रही है।

परिप्रेक्ष्य में झाड़ियों में शकुंतला की सहेली मृगिनी का भी चित्रण है। एसएम पंडित का प्रकृति प्रेम अत्यंत गहरा था इसलिए वह इस चित्र के परिप्रेक्ष्य को अत्यंत सजीव चित्रित कर पाए। जमीन पर कोमल घास है एवं उस पर कमल के पत्ते चित्रित हैं। पास में ही मालिनी नदी का भी अंकन है। तैल माध्यम में चित्रित यह पेंटिंग दर्शकों को पहली ही दृष्टि में आकर्षित कर लेती है। एसएम पंडित की यथार्थवादी शैली यहां पर अपने उत्कृष्ट रूप में दिखलाई पड़ती है।इनकी रंग शैली में यूरोपीय रेनेसां की भी झलक दिखलायी पड़ती है। रंगों का सामंजस बहुत ही सौम्य है। मानव आकृतियों के साथ.साथ वस्त्र चित्रण भी बहुत ही सजीव हैं। जिस प्रकार कालिदास ने पुष्प अलंकारों का वर्णन किया है उसी अनुरूप एसएम पंडित ने भी फूलों के अलंकारों का चित्रण किया है। जीवन में प्रकृति का महत्व एवं उपयोगिता क्या है इस पर एसएम पंडित ने विशेष जोर दिया है। इनका यह चित्र जिस श्लोक पर आधारित है, वह निम्नलिखित है:

तव न जाने हृदयम् मम पुनः कामो दिवाप्यि रात्रावपि ।
निघृण एतपति बलीयस्त्ववायि वृत्तमनोरथया अङ्गनि ।। (आ.शा. 3/13)

अर्थात् हे निर्दय! मैं तुम्हारे हृदय को नहीं जानती, परंतु तुम्हारी कामना वाले मेरे अंगों को कामदेव रात दिन अधिक तपा रहा है।

यह श्लोक अभिज्ञान शाकुंतलम् के तृतीय अध्याय से लिया गया है। इसमें एक प्रेयसी की उस मनःस्थिति को दिखलाया गया है जिसमें वह अपने प्रियतम से एक बार मिलने के बाद और भी आतुर हो उठती है दोबारा मिलने के लिए। यहां प्रेयसी के रूप में शकुंतला एवं दुष्यंत को चित्रित किया गया है। शकुंतला दुष्यंत से मिलने के बाद उसकी याद में लीन होती है। वह संकोचवश सखियों से अपने मन की बात नहीं कह पाती है, परंतु उसकी सखियां प्रियंवदा एवं अनसूया उसकी मनःस्थिति को समझ जाती हैं और वह शकुंतला को सुझाव देती है कि वह दुष्यंत को पत्र लिखे। इस प्रकार शकुंतला सकुचाती हुई तैयार होती है, एवं कमल पत्र पर अपने नख से अपने प्रियतम को

ISSN : **2581-6918 (E)**, 2582-1792 (P)
YEAR-03, VOLUME-03, ISSUE-04

पत्र लिखती है। यह प्रसंग अपने आप में एक चित्र है अर्थात् जब भी इस प्रसंग को पाठक पढ़ते हैं तो उन्हें लगता है कि वह कोई चित्र देख रहे हैं। एस.एम. पंडित के इस चित्र में भी यह प्रसंग सजीव हो उठा है।

चित्र सं. 2 शकुंतला की कंचुकी को ढीला करती सहेली।

यह प्रसंग अभिज्ञान शाकुंतलम् का एक महत्वपूर्ण प्रसंग है। इसे प्रथम अंक से लिया गया है। इस विषय को सबसे पहले राजा रवि वर्मा ने बनाया था। इसके बाद कई चित्रकारों ने इसे चित्रित किया। यह चित्र चित्रकार एसएम पंडित की कला श्रेष्ठता को दर्शाता है। यह चित्र सम्भवतः ग्वाश पद्धति में निर्मित है जिसकी खोज स्वयं पंडित ने की थी। इसकी विशेषता यह थी कि यह अत्यंत शीघ्रता से सूख जाता था। इस चित्र को एक प्रकार से रंगीन स्केच कहा जा सकता है, इसके बावजूद भी इसमें भाव की कोई कमी नहीं दिखलाई पड़ रही है। अत्यंत कम रंगों में शकुंतला के सौंदर्य को दिखा पाना एसएम पंडित की उत्कृष्ट कला का परिचायक है। संभवतः इसीलिए वे यथार्थवादी चित्रकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इस चित्र में शकुंतला जमीन पर बैठी है, जहां कुछ फूल भी चित्रित हैं, जो यह दर्शाते हैं कि वह बगीचे के बीच में है। शकुंतला के चेहरे पर तनिक तनाव का भाव है और पीछे उसकी सहेली शकुंतला की कंचुकी को ढीला कर रही है। पास में ही हिरण भी खड़ी है। दोनों के गहने फूलों के हैं जैसा कि कालिदास ने वर्णन किया है। इस चित्र को देखकर यह प्रतीत होता है कि एसएम पंडित को कालिदास की रचनाओं का पूर्ण ज्ञान था और वह इस से अत्यधिक प्रभावित भी थे। कालिदास ने इस प्रसंग का जितनी खूबसूरती से वर्णन किया है उसे पढ़कर आज भी पाठक का मन भाव विभोर हो उठता है। प्रेम प्रकृति के सानिध्य में ही पल्लवित हो सकता है जिसका उदाहरण स्वयं कालिदास एवं एसएम पंडित का यह चित्र है। इस प्रसंग में शकुंतला पौधों की सिंचाई अपनी सखियों के साथ कर रही होती है। तभी वह अपनी सखी से कहती है कि वह अपनी वस्त्रों की कसाव से परेशान है। इसका वर्णन कालिदास ने इस प्रकार किया हैः

शकुंतला – सखि अनसुये, अतिपिनद्धेन वल्कलेन

प्रियंवदा नियांत्रितास्मि। शिथिलय तावदेतत ।

अर्थात् सखी अनुसुइया प्रियंवदा द्वारा दृढ़ता से बंधे इस वल्कल वस्त्र से मैं पीड़ित हो रही हूं, इसे ढीला कर दो।

अनसूया – (सहासम्) अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवन मुपालभस्व। माँ किमुपालभसे

अर्थात् प्रियंवदा (हंसकर) इस विषय में स्तनों को विस्तृत करने वाली अपनी युवा अवस्था को उलाहना दो मुझे क्यों दे रही हो?

इस सुंदर हास परिहास को दुष्यंत एक स्थान से देख रहे होते हैं और यही से वह शकुंतला से प्रेम कर बैठते हैं। आगे दुष्यंत कहते हैंः

इदमुपहित सूक्ष्म ग्रंथिना स्कंधदेशे

स्तानयुग परिणाहाच्छादिना वल्कलेन

वापुराभिनवमसयाः पुष्यति स्वां न शोभां

कुसुममिव पिनद्धं पाण्डुपत्रोदरेण।। (आ.शा. 1/19)

अर्थात् कंधों पर बंधी हुई छोटी गांठ वाले तथा स्तन युगल विस्तार को ढकने वाले वल्कल वस्त्र से इसका यह यौवन संपन्न शरीर पीले पत्तों के अंतराल से आवृत्त पुष्प की भांति अपने सौंदर्य को धारण नहीं करता।

चित्र सं. 3 शकुंतला एवं दुष्यंत का मिलन।

यह चित्र अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक के सबसे महत्वपूर्ण प्रसंग पर आधारित है। इसमें दुष्यंत एवं शकुंतला का मिलन होता है। यह चित्र तैल माध्यम में है एवं इसमें दुष्यंत की बाहों में शकुंतला को प्रेम अवस्था में दिखलाया गया है। चित्रण शैली वही है जो एसएम पंडित की पहचान है। इन दोनों नायक नायिकाओं के साथ साथ हरे भरे वातावरण का भी सजीव चित्रण है जैसा कि इस प्रसंग में कालिदास ने वर्णित किया है। दोनों के शरीर विन्यास एवं वस्त्र विन्यास को बहुत ही बारीकी एवम् कुशलता से चित्रित गया है। दुष्यंत का एक हाथ शकुंतला के कंधों पर है एवं दूसरे हाथ से वह पेड़ की टहनी को पकड़े हुए हैं। जमीन पर पुष्प के साथ–साथ फल भी रखे हुए हैं। परिप्रेक्ष्य में पेड़ों के पीछे मालिनी नदी को बहते हुए चित्रित किया गया है। शकुंतला के गहने भी पुष्प के ही निर्मित किए गए हैं। चित्रकार द्वारा शकुंतला के चेहरे पर प्रेम में प्रथम मिलन के भाव को बड़ी सुंदरता से दिखलाया गया है। जिसमें मिलन के सुख के साथ एक चिंता का भी भाव है जो स्वाभाविक है। इस प्रसंग में दुष्यंत कहते हैं:

किं शीतलैः कलमविनोदिभिराद्रवातान्
संचारयामि नलिनीदलतालवृंतैः।
अङ्के निधाय करभोः यथासुखं ते
संवाहयामिं चारणवुत पदमाताम्रो ।। (आ.शा. 3/18)

अर्थात् हे करभोरू क्या मैं शीतल तथा थकावट दूर करने वाले कमलिनी के पत्तों के पंखे से ठंडी हवा करूं या कमल के समान लाल तुम्हारे दोनों चरणों को गोद में रखकर उसी प्रकार दबाऊं जिससे तुम्हें सुख मिले।

निष्कर्ष

इस प्रकार कालिदास ने मानवीय जीवन के सबसे संवेदनशील पक्ष प्रेम का गहराई से वर्णन किया है, जिसे पढ़कर पाठक समय के बंधनों को तोड़कर यह महसूस कर पाता है कि यह प्रसंग उसके जीवन की ही कोई घटना है। कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम् में 180 उपमाओं का उपयोग किया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि वह संस्कृत के सिद्धहस्त कवि थे। उन्होंने एक तरफ जहां अलौकिकता को दर्शाया हैं, वहीं दूसरी तरफ एक सामान्य मानव जीवन में होने वाली छोटी–बड़ी घटनाओं का भी वर्णन किया हैं। इसके साथ ही कालिदास नें प्रकृति के महत्व, सानिध्य एवं संरक्षण पर जोर दिया है और यही सबसे बड़ा कारण है कि, वर्तमान में भी कालिदास अत्यंत प्रसांगिक है। कालिदास का जिक्र हो और प्रकृति पर्यावरण की बात ना हो तो कुछ ना कुछ अधूरा रह जाएगा। इसी तरह चित्रकार भी यदि कालिदास के प्रसंग पर चित्रण करते हैं और उसमें प्रकृति ना हो तो वह चित्र भी प्रासंगिक नहीं हो सकता। एस.एम. पंडित ने इस तथ्य को भली भांति गहराई से समझा है और कालिदास के मुख्य उद्देश्य प्रकृति सौंदर्य को अपने चित्रों में उतारने की पूरी कोशिश की है।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्त, शिवशंकर, (2016), *महाकवि कालिदास प्राणीतं अभिज्ञान शाकुन्तलम्,* विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी। पृष्ठ सं. 15, 21, 23, 26, 93, 94, 95.
2. समकालीन कला, अंक– 32, ललितकला अकादमी, नईदिल्ली, पृष्ठ सं. 24.
3. समकालीन कला, अंक– 21, ललितकला अकादमी, नईदिल्ली, पृष्ठ सं. 38.
4. मागो, प्राणनाथ, (2011), *भारत की समकालीनकला : एक परिप्रेक्ष्य,* नेशनलबुक ट्रस्ट इंडिया, पृष्ठ सं. 19, 36.

5. Raja Ravi Verma, (2005), *Portrait of an Artist : The Diary of Raja Raja Verma*, Oxford University Press, New Delhi.
6. Panchal, Mohanrao B.K., *Chitrakalaveta* , Dr. S M Pandit, Prasaranga Publication.
7. Duncan Paul, Bouman Edo, Devraj Rajesh, *The Art of Bollywood*, Taschen Publication.
8. Pinney Christopher, *Photos Of the God's : The Printed Image and Political Struggle in India.*
9. Kaur Reminder, Sinha Ajay J., *Bollyworld : Popular India Cinema Through A Transactional Lens*, Sage Publication India, Pvt Ltd.
10. Jain Kajri, *God's in the Bazar : the economics of indian calendar Art*, Duke University Press.
11. Bamzai, P.N.K., (1994), *Culture and Political History of Kashmir,* M D Publication, Pvt Ltd, PP - 261, 62.
12. Krishnamoorthi K., Eng, (1994), Kalindi charan Panigrahi, Sahitya Akadmi, New Delhi, PP - 9,10.
13. ngmaindia.gov.in/Pc-Indian.
14. www.contemporary/in.gallerypagedhurandha.htm.
15. www.contemporary indian art.

****